आवश्यक निवेदन

जीवस्थान षट्खण्डागमका प्रथम खण्ड है । उसका प्रथम अनुयोगव्दार सत्प्ररुपणा है । उसकी प्रथम पुस्तक का अमरावती कारंजा और आरा की हस्तलिखित प्रतियोके आधारसे सम्पादन होकर इ.स. १९३९ मे प्रकाशन हुआ था । उस समय मूडबिद्रीके सिध्दांतमंदिरमें स्थित ताडपत्रीय प्रतियाँ अनुपलब्ध थी । प्रसन्नता है कि पुन: इसके संशोधनके समय सोलापुर स्थित श्री जीवराज जैन ग्रंथमाला के यशस्वी मंत्री काका श्री. वालचंद देवचंदजी शहा इनके सत्प्रयत्नसे उनके फोटो प्रिंट उपलब्ध हो गये हैं । उन्होंने इन्हें एन्लार्ज भी करा लिया है । साथ ही श्री. पं. बालचंदजी शास्त्री और श्री. प्रो जिनेंद्रकुमार भोमाज को नियुक्त कर मुद्रित प्रतियोंको सामने रखकर उनके पाठभेद भी लिखवा लिये है ।

किन्तु जब जीवराज जैन ग्रंथमालाने षट्खण्डागम धवलाकी अनुपलब्ध प्रथम छह पुस्तकोंको पुन: प्रकाशन का निर्णय कर उक्त पाठभेदोंके आधारसे उनके संशोधनका कार्य मुझे सौंपा तब सत्प्ररुपणा प्रथम पुस्तक का संशोधन करते समय मुझे यह अनुभव हुआ कि केवल इन पाठभेदोंके आधारसे संशोधन करना इसलिए पर्याप्त न होगा, क्योंकि, मात्र उन पाठभेदोंके आधारसे विचार करते हुए मुद्रित प्रतीमें ऐसे प्रचुर स्थल सन्देहास्पद रह जाते हैं जिनके लिए फोटो प्रिंटसे मिलान करना उपयोगी होगा। जब मैंने अपना यह दृष्टिकोण काका श्री. वालचंद देवचंदजी शहाके सामने रखा तब उन्होंने डॉ. ए. एन उपाध्येजी से परामर्ष कर फोटो प्रिंटोंसे मिलान की सब व्यवस्था करते हुए स्व. श्री पं. एन्. चंद्रराजेंद्र शास्त्री को इस कार्यमें मेरी सहायता करने के लिये नियुक्त कर दिया ।

षट्खण्डागम धवला और कषाय प्राभृत जयधवला की ताडपत्रीय सब प्रतियाँ हळे कानडी लिपिमें लिपिबध्द हुई है । स्व. श्री. पं. एन्. चंद्रराजेंद्र शास्त्री को इस लिपीको पढनेका अच्छा अभ्यास था। वे बडी सुगमता से उन्हें पढते थे । अत: उनकी सहायतासे मैंने सत्प्ररुणा प्रथम पुस्तक का अच्छी तरह सर्वांग मिलान किया । इससे शंकास्पद स्थलोंको ठीक करनेमें बडी

सहायता मिली । अब स्व. श्री. एन्. चंद्रराजेंद्र शास्त्री हमारे बीच नहीं है । असमयमें उनका वियोग एक अनहोनी घटना है । जब तक यह संशोधन का कार्य चलेगा उनकी याद बराबर आती रहेगी । यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि मुडबिद्रीमें षट्खण्डागम धवला की ताडपत्रीय तीन प्रतियाँ है ं उनमेंसे एक प्रति अधूरी प्रतीत होती है । शेष दो प्रतियां पूर्ण हैं । इतना अवश्य है कि बीचबीचमें उनके भी अनेक पत्र नष्ट हो गये हैं, और कहीं कहीं एकादा वाक्य वा कुछ अक्षर त्रुटित हो गये है । फिर भी उक्त दोनो प्रतियोंके फोटो प्रिंटोंके अधारसे ग्रंथके सन्दर्भ के मिलानमें कठिनाई नही जाती । ऐसे कुछ ही स्थल शेष रहते है जो त्रुटित रह जाते हैं । मैने अपना यह अनुभव सत्प्ररुपणा प्रथम पुस्तक और व्दितीय पुस्तक के मिलानके आधारसे लिखा है । संभव है कि आगे कुछ ऐसे स्थल भी हो जो सभी प्रतियोंमें न होनेसे उपलब्ध न किये जा सके।

इन तीन प्रतियोंमें से एकका संकेत्ताक्षर 'अ ' है । लगता है यह सबसे प्राचीन होनी चाहिये, क्योंकि, अन्य दो प्रतियोंमें उध्दृत रुपसे जो कतिपय अधिक गाथाएँ पाई जाती हैं वे उसमें नही हैं । शेष दो प्रतियाँ उसके बाद लिपिबद्ध की गई जान पडती हैं । उनमेंसे खंडित प्रति का संकेत्त अक्षर 'क ' है और तीसरी पूर्ण प्रति का संकेत्त अक्षर 'ब ' है ।

प्रथम संस्करण से इस संस्करणमें पाठभेदोंकी दृष्टि से पर्याप्त संशोधन हुआ है । यद्यपि प्रथम संस्करण से इस संस्करणमें जहाँ जहाँ पाठोंका संशोधन किया गया उन संशोधित पाठोंको मूलमें स्वीकार कर प्रथम संस्करणके पाठोंको 'मु' इस संकेत्ताक्षरके साथ पादटिप्पणोंमें दे दिया गया है । तथापि पाठाकोंके संशोधन की विशेषता का ज्ञान करानेके अभिप्रायसे उनमें कई दृष्टियोंसे अनेक उपयोगी संशोधित पाठोंकी मालिका यहाँ दी जाती है --

पृ.	पं.	प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	व्दितीय संस्करण
१	१	अप्पुत्थ	१	१	अप्पत्थ
१३	२	साहपसाहा	१३	२	साहुपसाहा
१५	५	सुकुक्खि	१५	५	सुकुक्खि

१६	९	णियतवाचय	१६	८-९	णियतव्वाचय
३२	१	किमिति	३३	३	किमर्थमिति
३२	५	दहति	३३	७	घातयति दहति
३६	२	सर्वोद्यम्	३७	१	सर्वाध्दा
३८	२	मडगलम् । तन्न	३९	२	मडगलत्वम् ।न
३९	१०	मंगल-फलं-देहिंतो कय अब्युदयणिस्सेयससुहाइत्तं	४०	१०	मंगलफल अब्भुदयणिस्सेयस सहाइ । तं
४०	३	वि णमो सुत्तं	४१	२	इणमो सुत्तं
४१	५	तच्च	४२	५	तं च
४१	६	बिबध्द देवदा	४२	६	कय-देवदा
४१	७	कय-देवदा	४२	७	ण णिबध्दो
५२	८	रत्नाभोगस्य	५३	८	रत्नभागस्य
६७	१	धारया	६८	१	धरा य
६७	५	धरसेण	६७	५	धरसेणाइरिय
८१	९-१०	जाणुग	८२	८	जाणय
८१	१०	सरीरं च भवियं	८१	८	सरीरं भवियं
८३	११	द्रोष्यत्य	८४	१०-११	द्रवति द्रोष्यत्य
९१	१	एवम्भूते	९२	१	एवम्भेदे
९२	४	जणिदोहवग्गहे	९३	५	जणिदोग्गहे
९६	९	णिसिहियं	९७	९	णिसीहियं
१०२	१	धम्मदेसणं	१०३	१	धम्मुवदेसणं
११०	३	वेश्याणं वस्सा	१११	४	वेश्यावंसा
११०	१	अवलेव ओ	१११	९	अलेवओ
११२	१	मत्थिणिद्देस्सो	११३	१	मत्थणिद्देसो
१२२	१	वत्थूहं	१२३	१	वत्थूणं
१२३	१०	बज्झए	१२४	१०	बुज्झए

१२८	८	मछंद्दत्ता	१२९	८	मछडंता
१३०	१०	उत्तपयडि	१३१	१०	उत्ता पयडि
१३४	२	परिह्रतमिति	१३५	३	परिह्रत्य किमिति
१३५	३	सिध्द	१३६	३	सिध्दि
१३६	५	नीतिनियमिते	१३७	५	'नि' नियमिते
१५७	३	पडिवज्जतिदि	१५८	३	पढिज्जदीदि
०१६३	१	जहमसहणं	१६४	१	जमसद्दहणं
१७१	१	सिथिल	१७२	१०	सिढिल
१७५	२	नान्यतरेण	१७६	४	तान्यन्तरेण
१९४	६	सहार्षाव	१९५	६	सहास्यार्षाव
१९६	७	विच्छेदस्यार्थ	१९७	८	विच्छेद:स्यात्, अर्थ
१९७	५	भावेनैकत्वे	१९८	६	भागेनैकत्वे
२०१	३	सिध्दगदी	२०२	५	सिध्दिगदी
२०४	२	सिध्दगदी	२०५	२	सिध्दिगदी
पृ.	पं.	प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	व्दितीय संस्करण
२१३	३	असंखेज्जाए गुणसेढीए	२१४	३	मसंखेज्जगुणाए सेढीए
२१८	३	कम्माणुसारी	२१९	१	कमाणुसारी
२२०	७	घादत्तबंधोसरण	२२१	७	घादतब्बंधोसरण
२२१	३	अ छद्दमाणेसु	२२१	८	अछंडमाणी सु
२२१	४-५	तदो तव्वयणाणं	२२१	११	तदो ण तव्वयणाणं
२२१	५	आइल्लु	२२१	१२	आइल्ल
२२१	६	इदि ँ आइरिय	२२२	१	इदि । आइल्लाइरिय
२२२	४	णिवट्टत्ति	२२३	१	फिट्टदि त्ति
२३२	१	वृत्ते:	२३४	७	वृत्ति:
२४५	७	वष्टम्भाच्चक्षु: । अनेकार्थ	२४७	५	वष्टम्भाच्चष्टेरनेकार्थ
२५१	१	तत्प्रतिघात:	२५३	५	तदप्रतिघात:

२५९	६	संज्ञिन: इति	२६१	११	संज्ञिन:, अमनस्का असंज्ञिन इति

।

२६९	२	स्यासंभव:	२७१	१	त्त्वस्य संभव:
२७९	४	योगनिरोधात्	२८१	५	योगविरोधात्
२९३	१	पूर्वायु	२९५	५	छिन्नपूर्वायुषा
२९४	४	न पुनरस्यार्थ	२९५	५	न पुनरस्यष:
२९७	९	ऋध्देरुपर्यभावत्	२९९	९	ऋध्देरुपर्यृध्द्यभावात्
३१२	७	षट् पर्याप्तयो	३१४	७	षडपर्याप्तयो
३१८	८	संजदासंजद ट्ठाणे	३२१	१	संजदासंजद-संजद-ट्ठाणे
३२१	४-५	जादि जादि जादि	३१३	४-५	जंति जंति जंति
३२१	६	पुनर्मरणं	३१३	७	पुनरमरणं
३३२	८	संजदासंजद ट्ठाणे	३३४	८	संजदासंजइ-संजद-ट्ठाणे
३३७	४	विकलेन्द्रिय	३३९	४	विकलैकेन्द्रिय
३३८	३	शांन्ततत्संतानानां	३४०	३	शान्तान्तस्संतानानां
३४०		वेदश्च स्त्रीवेद: ।	३४२	१०	स एषामस्तीति स्त्रीवेदा:

।

३४१		-वदनुगत	३४३	३	वदनवगत
३४१		जीवस्य कर्तृत्वात्	३४३	६	जीवस्य तस्य तत्कर्तृत्वात्
३४१		पुमान्नपुंसकमुभया ०	३४३	१०	पुमान्नपुंसक:, उभया ०
३४२		इट्ठावाग	३४४	२	इट्ठावाग -
३४२		तणिट्ठवागग्गि	३४४	५	तणिट्ठवागाग्गि
३४४		विषयाभिलाषे	३४६	३	विषयाभिलाषा
३४५		स्तेन विकाराभावात्	३४७	२	तेनाधिकाराभावात्
३४५		कथमवसीयत	३४७	५	कुतोऽवसीयत
३४५		वेदादपि	३४७	७	वेदावपि
३४५		सन्तापान्यूनतया	३४७	७	सन्तापात् न्यूनतया

३४६		कषाय	३४८	७	पर्यायत्वात् कषाय०
३४७		तथोक्तं	३४९	१	तथोक्ते: ।
३४७		अत्रतन च शब्द:	३४९	१०	अत्रतन: चशब्दो
३४८		भिन्नं तन्निर्देशो	३५०	१०	भिन्नस्तन्निर्देशो
३६०		भेयं च	३६२	१	भेयगयं
३६८		पुन:सयोग	३७०	१	पुन: स सयोग
३७०		नयादेशना	३७२	४-५	नयदेशना
३७०		देशेनानु ०	३७२	६	देशनानु०
पृ.	पं.	प्रथम संस्करण	पृ.	पं.	व्दितीय संस्करण
३७४		स्थानानां संख्या	३७६	१	स्थानसंख्या
३७४		पेक्षया न, तत्र	३७६	६	पेक्षया च तत्र
३७५		ष्टात्संयमो	३७७	७	ष्टात्य संयमो
३७७		नावेवाभविष्यतां	३७९	३	नावभविष्यतां
३७९		विधे:	३८१	४	विधि:
३७९		तध्दि ग्रहणं	३८१	५	तध्दिधिग्रहणं
३८१		विशिष्टार्थ:	३८३	१	विशिष्टोऽर्थ:
३८१		साधार्याभावे आधारकस्या	३८३	४	आवार्याभावे आवारकस्या
३८३		दृष्टान्त	३८५	८	दृष्टार्थ
३८३		सञ्जननात्	३८५	९	सञ्जनात्
३९०		पूजणिरदो	३९२	२	पूजण-रदो
३९१		पाठो नास्ति	३९३	६	शुक्ललेश्याध्वानप्रतिपाद नार्थमाह

-

३९२ रनन्तस्यापेक्षया ३९४ १० रनन्तस्यापि क्षय:, व्दित्र्यादि

तद्व्दित्र्यादि

ये कतिपय महत्वके पाठभेद हैं । जिनका यहाँ निर्देश किया है । इनमेंसे कतिपय पाठभेदोंको ध्यानमें रखकर अर्थमें भी परिवर्तन किया गया है । इससे समग्र ग्रंथ लगभग शुध्द हो गया है । पंचनमस्कारस्वरुप प्रथम मंगलसूत्र प्रात:स्मरणीय भगवान् आचार्य पुष्पदंत की अमर कृति है । वह सर्वार्थसाधक है । अ. और ब प्रतिमें वह ' णमो अरहंताणं ' इत्यादि रुपसे लिपिबध्द हुआ है । तदनुसार संशोधन करते समय मैंने यही पाठ स्वीकार कर लिया था । किन्तु मुद्रणके समय इसे बदल दिया गया है ।

इस संस्करणके मुद्रण का पूरा भार श्री. पं. नरेन्द्रकुमार भिसीकर (न्यायतीर्थ) इनके ऊपर है । प्रूफ रीडिंग आदिका सब कार्य वे और प्रा. जिनेंद्रकुमार भोमाज देखते हैं । वे सरल स्वभावी, व्युत्पन्नमति और तत्त्वनिष्ठ विव्दान् हैं । उन्होंने इस कार्य को अच्छी तरह सम्पन्न किया । इसके लिये मैं उनका विशेष आभारी हूँ ।

श्रीयुत पं. हीरालालजी सिध्दान्तशास्त्री का षट्खण्डागम धवलाके संपादनमें प्रारंभमें पूरा सहयोग रहा है । उन्होंने कषायप्राभृतचूर्णि और पंचसंग्रह आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथोंका संपादन किया है । वे अनुभवी विव्दान् हैं । अतएव काका श्री. वालचंदजी देवचंदजी शहा की सम्मतिपूर्वक संशोधित संस्करणका बारीकीसे मिलान करनेके लिये मैंने उन्हे वाराणसी आमंत्रित किया था । मेरे इस आमंत्रणको स्वीकार कर वे वाराणसी आये । ७-८ दिन तक मेरे घर ठहरे रहे । ग्रंथमें कहीं कोई त्रुटि न रह जाय इस दृष्टिसे मैने उनके साथ समग्र ग्रन्थका टिप्पण आदिके साथ वाचन कर उसे अंतिमरुप दिया । इसकेलिये मैं उनका आभारी हूँ ।

श्रीमान् डॉ. हीरालालजी और श्रीमान् डॉ.ए.एन्. उपाध्ये श्री जीवराज जैन ग्रंथमालाके प्रधान सम्पादक हैं । उन दोंनो विद्वानोंकी स्वीकृति पूर्वकही मुझे यह कार्य सौंपा गया था । इस विषयमें विशेष परामर्श करनेकेलिए मैं एक बार श्री. माणिकचंदजी भिसीकर, न्यायतीर्थ, एम्. ए. (बाहुबली) इनके साथ तथा दूसरी बार श्रीयुत पं. ब्र. माणिकचंदजी चवरे इनके साथ कोल्हापूर गया । दोनों बार श्री. डॉ.ए.एन्. उपाध्येजीने अपने बंगलेमें मुझे बहुत अच्छी तरह रखा और आवश्यक परामर्श दिया। एतदर्थ मैं उक्त सब विद्वानोंका आभारी हूँ ।

फोटो प्रिंटोंके आधारसे प्रस्तुत संस्करणका मिलान मैने बाहुबली (कुंभोज) के वास्तव्यमें किया है । इसके लिये मुझे वहाँ सब प्रकारकी सुविधा प्रदान की गई । इसके लिये मैं पूरे बाहुबली विद्यापीठ परिवारका आभारी हुँ।

काका श्री. वालचंदजी देवचंदजी शहा तो जीवराज जैन ग्रंथमाला सोलापूरके प्राण हैं । अपनी वृध्दावस्था की चिंता न करते हुए वे निरलस भावसे जीवराज जैन ग्रंथमाला सहित अनेक साहित्यिक तथा शैक्षणिक संस्थाओंकी संभाल करते रहते हैं । श्रीसिध्दक्षेत्र कुंथलगिरीकी देखभाल भी उन्हें ही करनी पडती है । उनकी ये सेवाऐं स्वर्णाक्षरोंमें अंकित करने लायक हैं । वे दीर्घजीवी होकर इसी प्रकार धर्म और समाजकी सेवा करते रहे यह भावना है। उनका इस कार्यमें मुझे यथासंभव पूरा सहाय्य प्राप्त हुआ । इसके लिए मैं उनका भी आभारी हूँ ।

इस संस्करणके मुद्रण का कार्य मेसर्स सन्मति मुद्रणालय, सोलापूरके संचालक तथा कर्मचारी गण इन्होंने अल्पावधिमें सुंदर छपाई के साथ संपन्न किया है । इसके लिये मै उनका भी आभारी हूँ ।

इस संस्करणके संशोधनमें मैंने अपनी पूरी प्रतिभाका उपयोग किया है । फिर भी कहीं कोई त्रुटि रह गई तो विव्दान् पाठक उसे सुधार कर पढें यह नम्र निवेदन है ।

विज्ञेषु अलम् ।

श्री सन्मति जैन निकेतन -
नरिया, वाराणसी - ५ निवेदक
ता. ११-१०-७२ फुलचंद सि.
शास्त्री